NOTES

:- अक्षर निधि :-

1. चिदानन्द - आत्मीय आनन्द
2. भेदज्ञान - निज और पर का ज्ञान
3. महारस - अनुभव का स्वाद
4. परमार्थ - परम अर्थ अर्थात् मोक्ष
5. धर्म - वस्तु का स्वभाव
6. अमूर्ति - निराकार
7. अलख - इन्द्रियगोचर नहीं
8. समता - राग-द्वेष रहित वीतरागभाव
9. रमता - लीन रहना
10. सत्ता - अस्तित्व
11. विश्रामी - शांति का रस भोक्ता
12. शिवगामी - मोक्ष को जाने वाला
13. पद पूरब - मोक्ष
14. अभेद - भेद व्यवहार से रहित
15. कूटस्थ - सर्वकाल एकरूप रहने वाली
16. विभाव - पर वस्तु के संयोग से जो विकार हो
17. साध्य - जो इष्ट अबाधित और असिद्ध हो
18. ध्रुव धर्म - अविनाशी स्वभाव
19. निरँजन - कर्म रहित
20. जगत - जन्म-मरण रूप संसार
21. महारुचि - दृढ़ श्रद्धान
22. जिन - जिन्होंने काम-क्रोधादि शत्रुओं को जीता
23. विशद - निर्मल
24. प्रतीति - श्रद्धान
25. जगवासी - संसारी

Sant

NOTES

26	विकार	-	विभाव परिणति
27	उपदेश	-	सीख
28	अविनाशी	-	नित्य
29	दशा	-	अवस्था
30	चिद्रूप	-	चैतन्यरूप
31	चिन्मय	-	ज्ञान - दर्शन सहित
32	निराबाध	-	साता असाता की बाधा रहित
33	चेतन	-	ज्ञान - दर्शन
34	अखण्ड	-	पूर्ण
35	अविवेक	-	अज्ञान
36	सुविवेक	-	सम्यग्ज्ञान
37	ज्ञायक	-	जानने वाला
38	कर्ता	-	जो कार्य करे
39	द्रव्यकर्म	-	ज्ञानावरणादि अष्ट कर्म
40	उदासीन	-	रागादि रहित
41	नियत	-	निश्चय
42	काय	-	शरीर
43	अविकल्पी	-	विकल्परहित
44	परोक्ष	-	इंद्रिय और मन आश्रित ज्ञान
45	प्रबोध	-	केवलज्ञान
46	शील	-	ब्रह्मचर्य
47	तप	-	इच्छाओ को रोकना
48	विरति	-	हिंसादिक पाँच पापों का त्याग
49	संयम	-	छहकाय के जीवों की रक्षा
50	उपयोग	-	ज्ञान दर्शन

51 साधक - सिद्ध करने वाला
52 पराधीन - दूसरों के आश्रित
53 अनूप - उपमारहित
54 सुमति - अच्छी बुद्धि
55 आस्रव बंध का कारण
56 संवर - आस्रव का निरोध
57 शास्वत स्वयंसिद्ध
58 सुथिर - अचल
59 अचेत - स्वरूप का भूलना
60 निर्वाण - मोक्ष
61 समाधि - ध्यान
62 अकृत - स्वयं सिद्ध
63 अज - जन्म रहित
64 विश्वनाथ - संसार का स्वामी
65 कीर्तन - गुणों का व्याख्यान करना
66 वंदना - गुणों की स्तुति करना
67 ध्यान - गुणों का स्मरण करना
68 एकता - एक आत्मा को ही अपना मानना
69 अखंडित - छिद - भिद नहीं सकता
70 ममता - पर द्रव्यों में अहं बुद्धि
71 अध्यात्म - आत्मा का स्वरूप बतलानेवाली विद्या
72 जाप - बार - बार नाम का उच्चारण
73 जगपंथ - संसार भ्रमण का उपाय
74 विकल्प - राग-द्वेष की तरंगें
75 जिनागम - जिनराज का उपदेश

Sant

76 आत्मघाती - अपने जीव का अहित करने वाला
77 जिनपंथी - जैन मत के उपासक
78 ज्ञेय - जानने योग्य पर-पदार्थ पदार्थ
79 पाप - हिंसादि पाँच पाप
80 सुबोध - सम्यग्ज्ञान
81 पुण्य - दया-दान, पूजादि
82 कुपंथ - मिथ्यामार्ग
83 असत - सत्ता रहित
84 सहज - स्वाभाविक
85 बालबुद्धि - अज्ञानी
86 प्रमेय - प्रमाण में आने योग्य
87 विनायक - शिरोमणि
88 सिद्ध - अष्टगुण सहित, अष्ट कर्म रहित भगवान
89 मूढता - मूर्खता
90 अशोक - शोक रहित
91 प्रज्ञा - सच्चाज्ञान - भेदविज्ञान
92 ज्ञाता - जानने वाला
93 दृशि - आत्मा की अनन्तशक्तियों में से एक
94 मुक्ति - एक समय की निर्मलपर्याय, सिद्धदशा
95 अनुभूति - अनुभव
96 सुधा - अमृतपान
97 परमेष्ठी - जो परमपद में स्थित है
98 अरहन्त - जो चार घातिया कर्मों का अभाव करते है
~~99~~
99 ~~सिद्ध~~ आचार्य - जो मुनिसंघ के नायक होते है
100. उपाध्याय - जो संघ में पठन-पाठन कराते है
101 साधु - जो रत्नत्रय की आराधना करते है

Sant

NOTES

102. तीर्थंकर – जो धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करते हैं
103. मंगल – जो पापों को गलाए एवं सच्चा सुख उत्पन्न करे
104. उत्तम – जो लोक में महान हो
105. शरण – शरण सहारे को कहते हैं
106. भगवान – जो वीतरागी और सर्वज्ञ होते हैं
107. सम्यग्दर्शन – सात तत्वों का श्रद्धान करना
108. सम्यग्ज्ञान – वस्तु का जैसा स्वरूप है वैसा जानना।
109. सम्यग्चारित्र – रागादि का परिहार करना अथवा आत्मलीनता।
110 विश्व – छह द्रव्यों का समूह
111. द्रव्य – गुणों का समूह
112. गुण – द्रव्य की विशेषताओं को गुण कहते हैं
113. पर्याय – द्रव्य या गुणों के परिणमन को पर्याय कहते हैं
114. तत्व – जो वस्तु जैसी है, उसका भाव
115. भव्य – जिनमे मोक्ष जाने की पात्रता हो
116. अभव्य – जिनमें मोक्ष जाने की पात्रता न हो
117. मिथ्यात्व – उल्टी मान्यता।
118. क्षमा – क्रोध का अभाव
119. अनुजीवी गुण – भावस्वरूपी गुण
120. प्रतिजीवी गुण – वस्तु का अभाव स्वरूपी गुण
121. निमित्त – कार्य की उत्पत्ति में जिस पर अनुकूल होने का आरोप आए

122. अकिंचित्कर – व्यर्थ
123. अक्रम – युगपत
124 अनुश्रेणि – मार्ग पर एक ओर चलने वाला

Sant